International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(5): 72-75

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(5): 72-75
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 17-07-2018
Accepted: 18-08-2018

डॉ० मोहन लाल
सहायक आचार्य, (संस्कृत) राजकीय कन्या महाविद्यालय, शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ० मोहन लाल
सहायक आचार्य, (संस्कृत) राजकीय कन्या महाविद्यालय, शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

महापुराणों में गणेश के बालरूप, अग्रपूजादिविषयक वर्णन

डॉ. मोहन लालच

प्रस्तावना

शोध-पत्र में भिन्न-भिन्न पुराणों में उपलब्ध सामग्री पर आधारित गणेश के बालरूप, शिव-पार्वती द्वारा सुतावलोकन, शिशु-गणेश को शिव-गौरी तथा देवी-देवताओं से शुभाशीर्वाद-प्राप्ति और अग्रपूजादि का विवरण प्रदान किया गया है।

(क) बालरूप

(i) ब्रह्मवैवर्तपुराण

ब्रह्मवैवर्तपुराण में विप्र वेशधारी श्रीकृष्ण भगवान् ने माता शैलजा को सर्वकर्मफलदात्री, नित्यरूपिणी और सनातनी कहा। उनका कथन था कि प्रत्येक कल्प में कृष्णरूपी गणेशात्मज की जननी बनने का सौभाग्य उन्हें प्राप्त होगा। एवंविध कहकर शीघ्र ही अन्तर्भूत होकर उन ईश ने बालरूप धर कर मन्दिर के भीतरी भाग में स्थित पार्वती के तल्प की ओर प्रस्थान किया तथा वह तल्पस्थ शिववीर्य में ही सम्मिश्रित हो गए और नवप्रसूत बालकसदृश गृह के उर्ध्व भाग का अवलोकन करने लगे। [1]

प्रस्तुत पुराणानुसार गणेश के शरीर की कान्ति शुद्धचम्पकसदृशी और प्रभा कोटि-कोटि निशाकर-तुल्य थी। सकल जनों के लिए सुखदृश्य और चक्षुरहिमवर्धक थे। उनका देह अत्यन्त मनोहर था और उन्होंने अनङ्ग को भी मोहित कर लिया था। उपमारहित उनका आनन शारदीय चन्द्रनिन्दक और चारुपद्मविनिन्दक नयनान्वित था। पक्वविम्ब फल उनके ओष्ठ और अधरपुट से तिरस्कृत हो रहे थे। उनके कपाल और कपोल सुमनोहर थे। उनकी नासिका का अग्रभाग रुचिर था जो कि मानों खगराज (गरुड़) चञ्चु पुट की निंदा कर रहा था। त्रिलोकी में निरुपण और श्रेष्ठ अवयवधारी शिशु (गणेश) मनोहर शय्या पर पाणिपाद को उछालते हुए शयन कर रहे थे। [2]

नारायण ने नारद से कहा कि श्रीहरि के अन्तर्धान होने पर दुर्गा एवं शंकर विप्रवेशधारी विष्णु को खोजने हेतु सर्वतः परिभ्रमण करने लगे। [3] परन्तु विप्र के न मिलने पर पार्वती के अन्तःकरण में शंकाओं ने जन्म लिया तत्पश्चात् अशरीरिणी वाक् (आकाशवाणी) को व्यथिता और कैवल्यसमन्विता दुर्गा ने श्रवण किया जिसने जगज्जननी को शान्त होकर मन्दिर में स्वसुत के अवलोकनार्थ कहा। उस आकाशवाणी के अनुसार वह शिशु साक्षात् गोलोकनाथ परिपूर्णतम परम श्री कृष्ण थे जो कि सुपुण्यकधारी तरु के सनातन फलरूप थे जिनके तेज का योगियों द्वारा प्रसन्नचित्त से निरन्तर ध्यान किया जाता है। [4]

(ii) लिङ्गपुराण

लिङ्गपुराण में 'विघ्नेश्वरोत्पत्ति' संज्ञकाध्याय में सुरों द्वारा शिवस्तुति किए जाने तथा उन से गणेश के सर्जनार्थ प्रार्थना करने का वर्णन किया गया है। इस पुराण में श्री गणेश को विघ्नेश्वरनाम्नाभिहित किया गया है। [5] प्रस्तुत पुराणानुसार सकल लोकों के जन्मप्रदाता गजवक्त्र को जगदम्बिका ने जन्म दिया था तत्काल सिद्धों, मुनियों, नभचरों और देवों ने पुष्प-वृष्टि की। उस समय सुरेश्वरों ने तंद्रारहित होकर गणेश्वर तथा महेश्वर का स्तवन किया। तदनन्तर उन दोनों से विनिर्गत मंगलनिलय शरीरधारी स्थित हुआ सुभैरव वह बालरूप गणेश नर्तन करने लग पड़ा। अद्भुत वसन तथा अलंकारों से सुशोभित उस शिव-सुत ने निज तात तथा माता-पिता को प्रणाम किया जातमात्र के अवलोकनान्तर उन सर्वेश्वर द्वारा निज तनय गजवक्त्र के समस्त जातकर्मादि (संस्कार) सम्पादित किए गए। महेश्वर ने उन्हें निज सुखदायक करों से ग्रहण तथा परिष्वजन करने के पश्चात् उनकी मूर्धा को सूंघा। [6]

(ख) शिव पार्वती द्वारास्वसुतावलोकन

(i) ब्रह्मवैवर्तपुराण

नारायण ने नारद से कहा कि श्री हरि के अन्तर्धान होने पर दुर्गा तथा शंकर ब्राह्मणवेशधारी विष्णु को खोजने हेतु सर्वतः परिभ्रमण करने लगे। पार्वती ने चिंतित होकर कहना आरम्भ किया कि अतिवृद्ध और क्षुधातुर ब्राह्मणप्रवर ने न जाने कहाँ प्रस्थान किया होगा। वे उनसे दर्शन देकर निज प्राणों की रक्षार्थ प्रार्थना करने लगी। पार्वती ने शिव को शीघ्र उठकर ब्राह्माणान्वेषण हेतु कहा। शैलजा का कहना था कि वह उन्मना होकर क्षणभर के लिए उनके समक्ष प्रकट हुए थे। उनका कथन था कि यदि क्षुधार्त अतिथि गृहस्थ के गृह से पूजा-सत्कार के बिना लौटता है तो उस गृही का जीवन व्यर्थ हो जाता है। पितृजन उसके द्वारा प्रदत्त पिण्डदान और तर्पण को ग्रहण नहीं करते, वह्नि उसकी आहुति और सुरों द्वारा उसके कुसुम तथा

जल गृहीत नहीं किए जाते हैं। उस अपवित्र गृहस्थ के हवन, प्रसून, जल और द्रव्य सभी सुरा-सदृश हो जाते हैं। उसके देह अमेध्यतुल्य और स्पर्शन पुण्यों को नष्ट करने वाला हो जाता है। [7]

पार्वती के एतादृश कथन-मध्य अशरीरिणी वाक् (आकाशवाणी) को व्यथिता और कैवल्यसमन्विता दुर्गा ने श्रवण किया जिसने जगज्जननी को शांत होकर निजगृह में स्वसुत के अवलोकनार्थ कहा। [8] उस आकाशवाणी के अनुसार वह शिशु साक्षात् गोलोकनाथ परिपूर्णतम परम श्री कृष्ण थे जो कि सुपुण्यकव्रतधारी तरु के सनातन फलरूप थे जिनके तेज का योगियों द्वारा प्रसन्नचित्त से निरन्तर ध्यान किया जाता है। वैष्णव, हरि, प्रजापति तथा हरप्रभृति देव जिनके ध्यान में मग्न रहते हैं। प्रत्येक कल्प में जिनकी अग्राभ्यर्चना की जाती है। जिनका स्मरणमात्र सकल विघ्नविनाशक है। आकाशवाणी के अनुसार उस पुण्यराशिस्वरूप मन्दिर में स्थित स्वपुत्र के उन्हें दर्शन करने चाहिए। प्रत्येक कल्प में जिस प्रकाश-रूप का ध्यान किया जाता है, उसी मुक्तिप्रद और भक्तानुग्रहविग्रहस्वरूप का दुर्गा द्वारा अवलोकन किया जाना चाहिए। वही उनकी कामना का पूर्ण बीज, तपरूपी कल्पतरु का फल और कोटि कन्दर्पों का निंदक था। [9] आकाशवाणी द्वारा दुर्गा को सूचित किया गया कि दुर्गास्वरूपा उनके द्वारा विलाप किया जाना व्यर्थ था क्योंकि जिस क्षुधातुर विप्र के लिए उनके द्वारा विलाप किया जा रहा था, वह वस्तुतः विप्रवेशधारी जनार्दन थे। इन वचनों के कथनानन्तर सरस्वती ने मौन धारण कर लिया। [10]

एवंविध आकाशवाणी के श्रवणानन्तर त्रासयुक्ता सती ने स्वालय में प्रस्थान किया जहाँ उन के द्वारा शतसंख्यक चन्द्रमाओं की कीर्तितुल्य आभायुक्त तथा निजाभा से भूतल को द्योतित करने वाले गेह के शिखर भाग की ओर स्मितपूर्वक निहार रहे और पर्यङ्क पर शयन करने वाले बालक को देखा गया। सानन्द स्वेच्छापूर्वक सर्वत्र देखते हुए शय्या पर क्षमण (उछल-कूद) करने वाले, स्तनपानेच्छुक, रुदन करने वाले और उमा शब्द के उच्चारणकर्त्ता उस अद्भुतरूपसमन्वित बालक को देखकर भयभीता तथा सर्वकल्याणकारिणी पार्वती ने शंभु के समीप जाकर उन्हें निज गृह में गमन करके प्रत्येक कल्प में उनके द्वारा ध्यायमान तथा तपस्या के फलदायक शिशु के दर्शनार्थ कहा। पार्वती के अनुसार गिरीश द्वारा अतिशीघ्र ही स्वसुतानन्नावलोकन किया जाना चाहिए जो कि पुण्यबीजरूप, महोत्सव, पुत् संज्ञक नरक से परित्राणार्थ सक्षम और भवतारक था। पार्वती का विचार था कि निखिल तीर्थस्नान और सर्वयज्ञदीक्षण पुत्र के शोभन दर्शन से प्राप्त पुण्य की षोडशी कलातुल्य भी नहीं होते हैं। सर्वस्व प्रदान करने से तथा धराप्रदक्षिणोपलब्ध पुण्य पुत्रदर्शनज पुण्य की सोलहवीं कला की समानता नहीं कर सकता है। [11] सकल तपों, अनशन, व्रतों, विप्रभोजनों और सुरसेवन से प्राप्त पुण्य सत्पुत्रलाभोद्भव पुण्य की षोडशी कला के सदृश नहीं होता है। [12]

पार्वती के वचनों को सुनने के पश्चात् प्रसन्नचित्त शिव ने शीघ्र ही निजप्रियासहित स्वभवन में आगमन किया जहाँ उन्होंने शय्या पर तप्तकाञ्चनसदृश निजहृदयस्थरूपवत् अतिमनोहर रूपाकृतियुक्त स्वसुतावलोकन किया। तदनन्तर पार्वती उस शिशु को शय्या से उठाकर निजोरःस्थल से लगाकर उसका चुम्बन करने में प्रवृत्त हो गई तथा हर्षजलधिनिमग्ना पार्वती ने कहा कि पूर्णसनातन और अमूल्यरत्नसदृश उस पुत्र-लाभ से उनकी मनोकामना की वैसे ही सिद्धि हो गयी थी, जैसे सहसैव श्रेष्ठ धन-सम्पदा की प्राप्ति से निर्धन की तथा चिरकालपूर्व प्रोषित (प्रवास में गए हुए) प्रियतम के आगमन पर किसी स्त्री की मानसिक सन्तुष्टि होती है। पार्वती के अनुसार यथा एकपुत्रा जननी चिरकालपूर्व गए हुए निजवत्स को पुनः आया हुआ पाकर सन्तुष्ट होती है, वैसी ही दशा उनकी भी थी। चिरकालपूर्व खोए हुए श्रेष्ठ रत्न तथा अनावृष्टि के समय सुवृष्टि को प्राप्त कर के जिस प्रकार कोई प्रफुल्लित होता है, उसी प्रकार वह भी पुत्र-प्राप्ति से हर्षित हो रही थी। [13] यथा चिरकाल पश्चात् निराश्रित नेत्रहीन का चित्त सुनिर्मल नयनलाभ करने से दुस्तर भीषण जलनिधि में पतित आपदाग्रस्त मनुष्य का मन नौका प्राप्ति से तथा तृष्णावशात् शुष्ककण्ठयुक्त मनुष्य का हृदय सुचिरकालानन्तर अत्यन्त सुशीतल और सुवासित जल-प्राप्त करके प्रसन्न होता है, उसी प्रकार शैलजा की मनःस्थिति भी थी। [14] दावानल में फंसे हुए को वह्निरहित स्थान और निराश्रित को आश्रय-प्राप्ति होने से जैसे उनकी अभिलाषा पूर्ति होती है, वैसे ही गौरी की भी इच्छा-पूर्ति हुई थी। चिरकाल से व्रतोपवास-कर्त्ता बुभुक्षित मनुष्य का हृदय यथैव निज समक्ष स्थित सर्वोत्तमान्नावलोकन से उल्लासयुक्त होता है, तथैव उनका मन-मयूर आनन्द से नर्तन कर रहा था। यह सब कहकर हर्षविभोर गिरिसुता ने स्वशिशु को निजांक में स्थापित कर उसे वत्सलतापूर्वक स्तनपान कराया। तदनन्तर सहृष्टचित्तयुक्त ईशान ने भी शिशु को गोदी में धारण किया। उन्होंने उसके गण्डस्थल का चुम्बन लिया तथा वेदोक्तविधिना आनन्दसहित उसे आशीर्वाद प्रदान किया। [15]

(ग) शिशु गणेश को देवों आदि से शुभाशीर्वाद-प्राप्ति

(ii) ब्रह्मवैवर्तपुराण

ब्रह्मवैवर्तपुराणानुसार गणेशोत्पत्ति अवसर पर शिव, पार्वती, हिमालय, विष्णु, ब्रह्मादि ने आनन्दमग्न होकर नानाविध वाद्यों का वादन करवाने के पश्चात् द्विजों, बन्दिजनों, भिक्षुओं को अनेकविधरत्न, मणि तथा माणिक्य, वस्त्र, गाएं, अश्व और गज दान में दिए। एतदनन्तर देवों द्वारा शिशु गणेश का मुखावलोकन भी किया गया। शिवपुत्रोत्सव पर प्राप्त दान-भाराक्रांत विप्रादियों ने शनैः-शनैः गमन करते हुए दान-विषयकी कथाएँ सुनाई जिन्हें बुद्धिमान् युवक तथा भिक्षुओं ने श्रवण किया। प्रसन्नचित्त विष्णु ने दुन्दुभिवादन, संगीत-पान, नर्तन, वेद-पाठ, मुनीन्द्र-पूजन तथा मांगलिक कार्य सम्पन्न करवा कर देवगणों सहित स्वयं नारायण भगवान् ने उस बालक को शुभाशीर्वाद प्रदान किये। [16] विष्णु ने बालक को आशीर्वाद देते हुए कहा कि वह चिरंजीवी, ज्ञान में शिव के समान, शौर्य में उनके सदृश और सम्पूर्ण सिद्धीश्वर बनेंगे। ब्रह्मा द्वारा आशिष् दिया गया कि उनकी कीर्ति से जगत् परिपूरित हो जाएगा, वह अतिशीघ्र ही सर्वजन पूजनीय हो जाएँगे। सर्वप्रथम उनकी अत्यन्त दुर्लभ पूजार्चना सम्पादित की जाया करेगी। धर्म के अनुसार वह उनके सदृश धर्मिष्ठ, सर्वज्ञाता, दयायुक्त, हरिभक्त और हरि के सदृश दुर्लभ बनेंगे। महादेव ने निज प्राणप्रिय पुत्र से कहा किवह उनके सदृश दानी, हरिभक्त, बुद्धि तथा विद्यासम्पन्न, पुण्यशाली, शान्त और जितेन्द्रिय होंगे। लक्ष्मी द्वारा दिया गया आशीर्वाद था कि उनकी स्थिति बालक के गृह तथा देह में शाश्वत् स्थान प्राप्त करेगी और उन्होंने गणेश को उनके तुल्य शान्त और मनोहारिणी पतिव्रता कान्ता-प्राप्ति का आशीर्वाद प्रदान किया। सरस्वती ने कहा कि विनायक उनके सदृश ही परमोत्कृष्ट कवित्व, धारणा और विवेचन-शक्ति तथा स्मृति-लाभ करेंगे। सावित्री ने स्वयं वेदजननी होने के कारण उन्हें मन्त्रजपशील, वेदवेत्ताओं में प्रवर वेदज्ञ तथा वेदज्ञानी होने विषयक आशीर्वादात्मक वचन कहे।[17] हिमालय ने गणेश की मति के सदैव श्रीकृष्ण में लीन रहने, श्रीकृष्ण में उनकी शाश्वती भक्ति होने, उनके तुल्य गुणवान और सदैव कृष्ण में परायण होने को कहा। मेनका ने आशीर्वाद दिया था कि वह गाम्भीर्य में सागर-सदृश सौन्दर्य में मनोज-तुल्य, श्री युक्त, श्रीपतितुल्य और धर्म में धर्मवत् होंगे। वसुन्धरा के अनुसार वह उनकी तरह क्षमावान्, शरणप्रदायक, सर्वरत्नवान्, निर्विघ्न, विघ्नविनाशक और शुभाश्रय बनेंगे। पार्वती ने निजसुत को निजजनक सम महायोगी, सिद्ध, सिद्धिप्रद शुभ, मृत्युंजय, ऐश्वर्यशाली और अतिदक्ष होने का आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् तत्रागत समस्त ऋषिगणों और सिद्धों ने भी गणेश को आशीर्वचन कहे। द्विजों और बन्दियों ने उनके मंगलार्थ कामना की। [18]

(घ) अग्रपूजा

पद्म, ब्रह्मवैवर्त, शिव, लिङ्ग और वाराहपुराण गणेश के अग्रपूजाविषयकसंदर्भों से ओत प्रोत हैं।

(i) पद्मपुराण

पद्मपुराण के प्रथम गणपतिस्तोत्रनामक सृष्टि खण्ड में श्री गणेशविषयक वर्णन प्राप्त होता है। प्रस्तुत पुराण में गंगामाहात्म्य-वर्णन के पश्चात् पुलस्त्य ने बताया कि व्यास शिष्य महामुनि संजय ने गुरु भीष्म को नमस्कार करके देवगणों के पूजनोपाय, क्रम, नित्यपूजन में अग्रपूज्यतम कौन होता है और मध्य में किसका पूजन होना चाहिए-इस विषय में सुनिश्चितरूपेण जानने के लिए प्रश्न किए। उन्होंने आगे कहा कि अंत में किस देव की पूजा करनी चाहिए और किसका क्या प्रभाव होता है। ब्रह्म की अर्चना कर मनुष्य किस-किस फल की प्राप्ति करता है। [19] व्यास ने उत्तर दिया कि इस लोक में गणेश की अग्रपूजा अविघ्नत्वार्थ करनी चाहिए जिससे विनायकत्व प्राप्ति होती है क्योंकि वह गौरीसुत हैं। [20] महर्षि व्यास ने बताया कि प्राचीन काल में पर्वतसुता उमा ने महेश्वर स्कन्द और गणाधिप दो पुत्रों को जन्म दिया जो कि सर्वलोकधारी, शूरवीर और देवस्वरूप थे। उन दोनों का अवलोकन कर नगसुता उमा ने उन्हें सिद्धयर्थ कहा कि हर्षान्वित देवों द्वारा यह एक मोदक प्रदान किया गया था। महाबुद्धिनाम्नाविख्यातऔर सुधापरिनिर्मित उस मोदक के गुणों का पार्वती वर्णन करने जा रही थी जिन्हें उन्होंने दोनों पुत्रों से समाहित (एकाग्रचित्त) होकर सुनने का आग्रह किया क्योंकि इसके आघ्राणमात्र से ही निश्चितरूपेण अमरत्व की प्राप्ति होती है। सभी शास्त्रार्थों का तत्त्वज्ञ, सकल शास्त्रास्त्रों का ज्ञाता, समस्त तन्त्रों में निपुण, चित्रकार, लेखक, सुधी, ज्ञान-विज्ञान-तत्त्वज्ञ और जो सर्वज्ञ धर्माधिक्ययुक्त सिद्धिशत की प्राप्ति करेगा, उसी को उनके द्वारा मोदक प्रदान किया जाएगा क्योंकि उनके पिता का मत भी यही था। [21]

जननी के मुख से एवंविध वचनों का श्रवणकर परमकोविद स्कन्द ने तुरन्त स्वमयूर पर समारूढ़ होकर त्रिभुवनस्थित सकल तीर्थों की ओर प्रस्थान किया। क्षणभर में ही स्नान करके तथा माता-पिता की प्रदक्षिणा करने के पश्चात् लम्बोदरधर सुधी गणेश हर्षान्वित होकर जननी-जनक के समक्ष स्थित हो गए। स्कन्द भी-मुझे (मोदक) दो-यह कहते हुए सामने आ खड़े हुए। उन दोनों को देखकर विस्मित पार्वती ने कहा कि निखिल तीर्थों के अभिषेक, समस्त देवों, नमनों, सभी यज्ञों, व्रतों, मन्त्रों, योगों, और अन्य यमों के द्वारा कोई भी व्यक्ति माता-पिता की अर्चना करने वाले की षोडशी कला को भी प्राप्त करने में समर्थ नहीं होता है। उमा के विचार में शतसंख्यक गुणों से युक्त सैकड़ों पुत्रों की अपेक्षा यह (गणेश) श्रेष्ठ थे, अतः उनके द्वारा देवनिर्मित मोदक हेरम्ब को प्रदान किया जा रहा था। [22]

उमा का विचार था कि इसी कारणवशात् इनकी यज्ञों, वेदशास्त्र, स्तवादि और नित्य पूजाविधाओं में अग्रपूजा की जानी चाहिए। भूतेश (शंकर) सहित उमा द्वारा उन्हें महान् वर प्रदान किया गया। उन्होंने कहा कि इनकी अग्रपूजा से देवगण सन्तुष्ट होंगे। गणेश्वर के नित्य अग्रपूजन के अनन्तर ही समग्र देवों के साथ पितरों का जप-तप करना चाहिए। [23] सभी यज्ञों में द्विज द्वारा गणप (गणेश) की अर्चना की जानी चाहिए, तभी देव देवी से (उमामहेश्वर) के वचनों के अनुसार वे (यज्ञादि) कोटि-कोटि गुणों से युक्त होते हैं। देव और देवियों ने प्रसन्नतापूर्वक सभी पुण्य एवं गुणों को गणेश को प्रदान करने के पश्चात् सभी देवों के समक्ष उन्हें गणाधिपत्य भी दिया। उसी समय से प्राज्यों, यज्ञों, स्तोत्रों और नित्यपूजन में गणेश की पूजा करके नर सर्वसिद्धि प्राप्त करता है। एवंविध ज्ञान पाकर देवों द्वारा अभीष्ट-प्राप्ति की कामना से उनकी पूजा की गयी। इसी प्रकार सभी मनुष्यों को भी उनकी अर्चना से स्वर्ग और मोक्ष की निश्चितरूपेण प्राप्ति होती है। [24]

(ii) ब्रह्मवैवर्तपुराण

ब्रह्मवैवर्तपुराण में विष्णु ने शंकर से कहा कि उनके वर के कारण सब देवों में गणेश की अग्रपूजा होगी जिसके फलस्वरूप मनुष्य बिना किसी विघ्न-बाधा के फल की प्राप्ति करने में समर्थ है अन्यथा उसकी पूजार्चना वृथा ही हो जाएगी। इस पुराण में गणेश, दिनेश, विष्णु, शम्भु, हुताशन और दुर्गेत्यादि की अर्चनानन्तर ही अन्य देवों की पूजा का विधान किया गया है। गणेशोपासना करने से विश्व में विघ्नों का समूल नाश हो जाता है। [25] प्रस्तुत पुराण में आकाशवाणी ने माता पार्वती को कहा कि योगी जनों द्वारा सतत् जिस अविनाशी तेज का प्रसन्नचित्त से ध्यान किया जाता है तथा ब्रह्मा, विष्णु और महेशादि देवता भी जिसके ध्यान में मग्न रहते हैं और प्रत्येक कल्प में जिस पूजनीय का सर्वाग्र-पूजन होता है तथा जो पुण्य का भण्डार हैं (एवंविध निजसुत के दर्शनार्थ उन्हें स्वसदन में प्रविष्ट होना चाहिए। [26] श्रीगणेश के शुभाशीर्वाद प्रदानावसर पर विधाता ब्रह्मा ने कहा कि उसके यश से विश्व परिपूर्ण होगा, वह शीघ्रमेव सर्वपूज्य होंगे। उनकी अत्यन्त सुदुर्लभ पूजा सर्वप्रथम सम्पादित होगी। [27]

प्रस्तुत पुराण में शनि के गमनानन्तर विष्णु ने शुभ काल में देवों और मुनियों सहित गणेश-पूजन करने के पश्चात् सर्वाग्रपूजा [28] का वरदान प्रदान करते हुए उन्हें अनुत्तमोपहार भी दिए। विष्णु द्वारा श्री गणेश की स्तुति के अवसर पर उन्हें सब के आदिरूप, अग्रपूज्य, सर्वपूज्य, गुणार्णव, स्वेच्छा से सगुण एवं स्वेच्छापूर्वक पुनः निर्गुण ब्रह्म का रूप धारण करने वाला कहा गया। [29]

एकदा नारायण प्रदत्त पारिजात प्रसून को महाभाग मुनीन्द्र दुर्वासा ने प्रसन्न होकर इन्द्र को प्रदान करते हुए उसके माहात्म्य के विषय में बताया कि नारायणनिवेदित यह कुसुम सभी विघ्नों का हरण करने वाला था। जिसके मस्तक पर यह स्थापित होगा उसकी सर्वतः जय होगी [30] और साथ ही देवों में अग्रणी होकर अग्राराधना का पात्र भी बनेगा। [31] विष्णुप्रिया छायासदृश उसका कभी त्याग नहीं करेगी। वह ज्ञान, तेज, बुद्धि, पराक्रम और बल में सदैव हरिवत् और समस्त देवों से बढ़कर होगा। एतद्विपरीत यदि किसी नराधम द्वारा हरि के इस नैवेद्यस्वरूप पारिजात को अहंकारवशात् भक्तिभावपूर्वक मस्तक पर धारण नहीं किया जाएगा, तो वह श्री हीन हो जाएगा। [32] इन्द्र ने उस पारिजात को स्वशिर पर ग्रहण न करके रम्भाप्सरा के निकटवर्ती गजमस्तक पर प्रक्षिप्त कर दिया जिसके फलस्वरूप सुरेश्वर श्रीहीन हो गए। वह गजराज भी इन्द्र का त्याग करके महारण्य में प्रविष्ट हो गया। हरि ने उसी का मस्तक काटकर बालक (गणेश) के तन पर संयोजित किया था। [33]

ब्रह्मवैवर्तपुराण में ही पार्वती ने ही परशुराम को कहा कि गणेश्वर के श्री कृष्णांश होने के कारण वह तेज में उन्हीं के तुल्य थे। अन्य देवगण श्री कृष्ण की कलाएं थे, अतएव इन (गजानन) अग्रपूजा सम्पादित होती है। [34] इसी पुराण में प्राप्त वर्णनानुसार गणेश, कार्तिकेय से पहले जन्म लेकर हरालय में प्रकट हुए तथा सर्वदेवगणों में जिनकी अग्रपूजा होती है, उन गुहाग्रज देव की इस में वन्दना की गयी है। [35]

(iii) शिवपुराण

शिवपुराण में वर्णन प्राप्त होता है कि महर्षि नारद ने प्रजेश्वर (ब्रह्मा) को गणेश के पुनर्जीवित होने के उपरान्त घटित घटना पर प्रकाश डालने हेतु कहा। ब्रह्मा ने मुनि नारद से कहा कि उमा निजपुत्र को जीवित देख कर अत्यधिक आनन्दित हुई। पुनर्जीवित निर्व्यग्र और विकृत शिवापुत्र गजानन को सुरों तथा गणाध्यक्षों ने अभिषिक्त किया। तदनन्तर पुत्रावलोकन से प्रसन्न देवी द्वारा बालक को पकड़ कर हर्षपूर्वक भुजाओं से परिष्वजन किया गया। अम्बिका ने प्रीतिपूर्वक निजतनय को नानाविध वस्त्र एवं अलंकार प्रदान किए। देवी ने पुत्र की सिद्धियों द्वारा अर्चना करके उनका सर्वदुःखहर हस्त से स्पर्श किया। सुत के पूजनानन्तर मुख को चूमकर उमा ने उन्हें प्रसन्नतापूर्वक [36] धन्य, कृतकृत्य, समस्त देवों में पूर्वपूज्य (अग्रपूज्य) और दुःखविहीन होने का वरदान दिया। पार्वती ने आगे कहा कि उनके आनन पर दृष्टिगोचर होने वाले सिन्दूर के कारण वह मनुष्यों द्वारा सिन्दूर से पूजित होंगे। [37] जो (मनुष्य) पुष्प अथवा चन्दन अथव गन्ध अथवा शुभ नैवेद्य और सुरम्य नीराजन द्वारा विधिपूर्वक तथा तांबूल, परिक्रमा, दान और नमस्कार-विधान से उनकी अर्चना करेगा, उसे निःसन्देह सकल सिद्धियाँ प्राप्त होंगी और उनकी कृपादृष्टि से निःसन्दिग्धरूपेण नानाविध विघ्नों का क्षय हो जाएगा। [38]

(iv) लिङ्गपुराण

प्रस्तुत पुराण में भव ने बालगणेश्वर से कहा कि युवक तथा वृद्ध भक्तों द्वारा पूजित उन्हें यत्नपूर्वक उन के परित्राणार्थ प्रवृत्त होना चाहिए। वह विघ्नगणेश्वर निःसन्देह त्रिलोकी में सम्पूज्य और वंदनीय होंगे। शंकर ने गजानन को हरि-हर तथा ब्रह्मा के यज्ञों से यजनकर्ता ब्राह्मणों द्वारा कृतार्चनों में भी अग्रपूजा किए जाने का आशीर्वाद प्रदान किया। [39] शंकर के विचारानुसार उस मनुष्य के कल्याण की अकल्याण में परिणति हो जाएगी जो लौकिक कल्याणार्थ श्रौत तथा स्मार्त कर्मों को उनकी आराधना के बिना ही सम्पादित करेगा। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र-सभी वर्णों के लोगों द्वारा गणपति समस्त कार्य-सिद्धि-हेतु शुभ भक्ष्यभोज्यादि से पूजित होंगे। जगत्त्रय में देवगण तथा अन्य नरों के लिए गंध, पुष्प, धूपादि द्वारा उनका समाराधन किये बिना किसी भी पदार्थ की प्राप्ति असम्भव होगी। शिव ने कहा कि गणपति-आराधक मानव निःसन्देह ही शक्रप्रभृति के भी आराध्य होते हैं। फलार्थी होकर ब्रह्मा, हरि, शिव तथा महेन्द्रेत्यादि देवों द्वारा भी उनकी अर्चना न किए जाने परवह उन्हें विघ्नों से बाधित करेंगे। तत्काल गणपति प्रभु द्वारा विघ्नगणोत्पत्ति की गई और गणों सहित प्रणाम करके उनके सम्मुखास्थित हो गए। [40] उस समय से गणेश्वर लोगों द्वारा आराधित होते हैं। उन गणेश द्वारा दैत्यों के धर्म में विघ्नोत्पत्ति की गयी थी। प्रस्तुत पुराण में एवंविध स्कन्दाग्रजोत्पत्ति वर्णित है। उनके माहात्म्य के पठन-पाठन और श्रवणकर्त्ता सुखानुभूति करता है। [41]

(v) वाराहपुराण

वाराहपुराणानुसार जब विनायक से विविधास्त्रों को हाथों में धारण करने वाले और तमाल तथा नीलांजनतुल्य अनेकविध गजवक्त्र ऊपर की ओर उठ खड़े हुए, तब महादेव मनसा अत्यधिक व्याकुल हो गए। विनायक अत्यंत अद्भुत कर्मों के सम्पादित करने वाले, एकाकी ही महान् कर्मकारी, सुरों के कार्य के सम्पन्नकर्ता और सभी के इष्ट भी बन गए थे। गणपति के चारों ओर क्या था? देववृन्द द्वारा निरन्तर इस प्रकार चिन्तन किए जाने पर धरा अत्यधिक क्षुब्ध हो गई। अतुलनीयविमानारूढ़ होकर चतुर्मुख ब्रह्मा ने गगन में इस वाक्य का उच्चारण किया कि सुर अत्यधिक धन्य थे। वे अद्भुत रूपवान् देवनायक परमेश्वरत्र्यम्बक के द्वारा अनुगृहीत किए गए थे क्योंकि विघ्नकर्त्ता सुरद्वेषी असुर उनके समक्ष नहीं टिक पाएंगे। [42]

उन (देवों) को एवंविधिन्न कहने के अनन्तर प्रपितामह ब्रह्मा ने त्रिशिखास्त्रहस्तधर्ता विभु महादेव से कहा कि यह जो उनके वक्त्रसमुद्भूत विनायकों का प्रभु था, वे सब उनका अनुगमन करेंगे। प्रस्तुत पुराण में आगे यह वर्णन आया है कि शिव के द्वारा तथा उन विनायक के आत्मवर से गगन में वह चारों में देहधारी होंगे और नभ उनके द्वारा ही बहुधा व्यवस्थित है और एक है तथा एवंविध कथन करने वालों के वे सब अपयात हो जाएंगे। इस रीति से पितामह ने भगवान् शिव से प्रतिमायुधपाणि से प्रभुत्वसम्पन्न होने और उन अस्त्रों तथा वरों को प्रदान करने का आग्रह किया। [43]

इस कथन के अनन्तर पितामह के वहाँ से प्रस्थान करने पर त्रिनेत्र महादेव ने निजात्म-समुद्भूत पुत्र से कहा कि विनायक, विघ्नकर, गजास्य और गणेशसंज्ञक भवपुत्र जो कि सब के क्रूरदृष्टिसम्पन्न, प्रचण्ड भृत्य विनायक थे, उन को उस स्थान से प्रस्थान कर जाना चाहिए अर्थात् दूर हो जाना चाहिए क्योंकि उच्छुमदानप्रभृति से वृद्धि को प्राप्त हुए देहयुक्त वे कार्यसिद्धि का प्रतिपादन करने वाले थे। [44] सुरों, यज्ञानुष्ठानों और महानुभावों के अन्य क्रिया-कलापों मेंगणपति अग्रपूजा से सम्मानित होंगे अन्यथा वह कार्य-सिद्धि के विनाशक बनेंगे। [45]
परमेश्वर महादेव के कथन के पश्चात् कांचनकुम्भसहित स्थित देवों द्वारा जलाभिसिंचित गात्र वाले गजवक्त्र विराजित हुए और विनायक-प्रमुख भी बने। अभिषिक्त गणेश का दर्शन करके सुरों ने भगवान् त्रिशूलपाणि के सान्निध्य में अवनत होकर गणेश का स्तवन करते हुए उन्हें गजवक्त्र, विनायक तथा गणनायक संबोधित करते हुए नमन किया। इसके साथ ही उन्होंने गणपति को चण्डविक्रम, विघ्नकर्त्ता और सर्पमेखलाधर्त्ता कहते हुए प्रणाम किया। रुद्रवक्त्र और प्रलम्बजठराश्रित की नमस्कारपूर्वक स्तुति करते हुए देवों ने उनसे प्रार्थना की कि गणेश को उनके द्वारा कृत प्रणाम से सदैव विघ्नविनाशक बनना चाहिए। [46]

संधर्व सूची

1. ब्र.वै.पु., 3/8/81 (उत्तराधं)-84.
2. शुद्धचम्पकवर्णाभः कोटिचन्द्रसमप्रभः।।
   सुखदृश्यः सर्वजनैश्चक्षुररश्मिविवर्द्धकः ।।
   अतीव सुन्दरतनुः कामदेवविमोहनः।।
   मुखं निरुपमं बिभ्रच्छारदेन्दुविनिन्दकम्।।
   सुन्दरे लोचने बिभ्रच्चारुपद्मविनिन्दके।।
   ओष्ठाधरपुटं बिभ्रत्पक्वबिम्बविनिन्दकम्।।
   कपालं च कपोलं च परमं सुमनोहरम्।।
   नासाग्रं रुचिरं बिभ्रद्विन्द्रच०चुविनिन्दिकम्।।
   त्रैलोक्ये वै निरुपमं सर्वांगं बिभ्रदुत्तमम्।।
   शयानः शयने रम्ये प्रेरयन्हस्तपादकम्।। वही, 3/8/85-89.
3. वही, 3/9/1.
4. वही, 3/9/8-9.
5. लिङ्ग पु., 2/70/1.
6. लिङ्ग पु., 2/70/15-21.
7. ब्र.वै.पु., 3/9/1-6.
8. वही, 3/9/7-8 (पूर्वाधं).
9. कृष्णं गोलोकनाथं तं परिपूर्णतमं परम्।।
   सुपुण्यकव्रततरोः फलरूपं सनातनम्।।
   यत्तेजो योगिनः शश्वद्ध्यायन्ति सन्ततं मुदा।।
   ध्यायन्ति वैष्णवा देवा ब्रह्मविष्णुशिवादयः।।
   यस्य पूज्यस्य सर्वाग्रे कल्पे कल्पे च पूजनम्।।
   यस्य स्मरणमात्रेण सर्वविघ्नो विनश्यति।।
   पुण्यराशिस्वरूपं च स्वसुतं पश्य मन्दिरे।।
   कल्पे कल्पे ध्यायसि यं ज्योतीरूपं सनातनम्।।
   पश्य त्वं मुक्तिदं पुत्रं भक्तानुग्रहविग्रहम्।।
   तव वा०छापूर्णबीजं तपः कल्पतरोः फलम्।।
   सुन्दरं स्वसुतं पश्य कोटिकन्दर्पनिन्दकम्।। वही, 3/9/8 (उत्तराधं)-13.
10. वही, 3/9/14.
11. ब्र.वै.पु., 3/9/15-22.
12. सर्वैस्तपोभिर्यत्पुण्यं यदेवानशनैर्व्रतैः।।
    सत्पुत्रोद्भवपुण्यस्य कलां नार्हति षोडशीम्।।
    यद्विप्रभोजनैः पुण्यं यदेव सुरसेवनैः।।
    सत्पुत्रप्राप्तिपुण्यस्य कलां नार्हति षोडशीम्।। वही, 3/9/23-24.
13. वही, 3/9/-30.
14. यथासुचिरमन्धानां स्थितानां च निराश्रये।।
    चक्षुस्सुनिर्म्मलं प्राप्य मनः पूर्णं तथैव मे।।
    दुस्तरे सागरे घोरे पतितस्य च संकटे।।
    अनौकस्य प्राप्य नौकां मनः पूर्णं तथा मम।।
    तृष्णया शुष्ककण्ठानां सुचिराच्च सुशीतलम्।।
    सुवासितं जलं प्राप्य मनः पूर्णं तथा मम।। वही, 3/9/31-33.
15. वही, 3/9/34-38.
16. ब्र.वै.पु., 3/10/1-20.
17. वही, 3/10/21-27.
18. वही, 3/10/28-32.
19. पद्म पु., 1/63/1-3.
20. गणेशं पूजयेदग्रे त्वविघ्नार्थं परेत्विह।।
    विनायकत्वमाप्नोति यथा गौरीसुतो हि सः।। वही, 1/63/4.
21. पद्म पु., 1/63/5-10.
22. वही, 1/63/10-16.
23. अस्यैव कारणादस्य अग्रे पूजा मखेषु च।।
    वेदशास्त्रस्तवादौ च नित्यं पूजा विद्यासु च।।
    पार्वत्या सह भूतेशो ददौ तस्मै वरं महत्।।
    अस्यैव पूजनादग्रे देवास्तुष्टा भवंतु च।।
    सर्वासामपिदेवानां पितृणां च समं ततः।।
    तपो भवतु नित्यं च पूजितेऽग्रे गणेश्वरे।। वही, 1/63/17-19.
24. वही, 1/63/20-23.
25. पूज्यश्च सर्वदेवानामस्माकं जगतां विभुः।।
    सर्वाग्रे पूजनं तस्य भविता मद्वरेण वै।।
    पूजासु सर्वदेवानामग्रे संपूज्य तं जनः।।
    पूजाफलमवाप्नोति निर्विघ्नेन वृथाऽन्यथा।।
    गणेशं च दिनेशं च विष्णुं शंभुं हुताशनम्।।
    दुर्गामेतान्सन्निषेव्य पूजयेद्देवतान्तरम्।।
    गणेशपूजने विघ्नं निर्मूलं जगतां भवेत्।। ब्र. वै. पु., 3/6/97-100 (पूर्वाधं).
26. ब्र.वै.पु., 3/9/9 (पूर्वाधं)-11.
27. यशसा ते जगत्पूर्णं सर्वपूज्यो भवाचिरम्।।
    सर्वेषां पुरतः पूजा भवत्वतिसुदुर्लभा।। वही, 3/10/22.
28. सर्वाग्रे तव पूजा च मया दत्ता सुरोत्तम।। वही, 3/13/2. (पूर्वाधं)
29. सर्वाद्यमग्रपूज्यं च सर्वपूज्यं गुणार्णवम्।।
    स्वेच्छया सगुणं ब्रह्म निर्गुणं स्वेच्छया पुनः।। वही, 3/13/48.
30. वही, 3/20/53-54.
31. पुरः पूजा च सर्वेषां देवानामग्रणीर्भवेत्।। वही, 3/20/55 (पूर्वाधं).
32. वही, 3/20/55 (उत्तराधं) -57 (उत्तराधं).
33. वही, 3/20/58-62 (पूर्वाधं).
34. तेजसा कृष्णतुल्योऽयं कृष्णांशश्च गणेश्वरः।।
    देवाश्चान्ये कृष्णकलाः पूजाऽस्य पुरतस्ततः।।, वही, 3/44/27.
35. गुहस्याग्रे च जातोऽयमाविर्भूतो हरालये।।
    वन्दे गुहाग्रजं देवं सर्वदेवाग्रपूजितम्।। वही, 3/44/94.
36. शि.म.पु. (रु.सं.), 4/18/1-7.
37. धन्योऽसि कृतकृत्योऽसि पूर्वपूज्यो भवाधुना।
    सर्वेषाममराणां वै सर्वदा दुःखवर्जितः।।
    आनने तव सिन्दूरं दृश्यते सांप्रतं यदि।
    तस्मात्त्वं पूजनीयोऽसि सिन्दूरेण सदा नरैः। शि.म.पु. (रु.सं.),4/18/8-9.
38. वही, 4/18/10-12.व
39. त्वं भक्तान् सर्वयत्नेन रक्ष बालगणेश्वर।
    यौवनस्था०च वृद्धा०च इहामुत्र च पूजितः।।
    जगत्त्रये सर्वत्र त्वं हि विघ्नगणेश्वरः।
    संपूज्यो वन्दनीयश्च भविष्यसि न संशयः।
    मां च नारायणं वापि ब्रह्माणमपि पुत्रक।
    यजंति यज्ञैर्वा विप्रैरग्रे पूज्यो भविष्यसि।। लिङ्ग पु., 2/70/27-29.
40. वही, 2/70/30-35.
41. तदा प्रभृति लोकेऽस्मिन्पूज्यन्ति गणेश्वरम्।
    दैत्यानां धर्मविघ्नं च चकारासौ गणेश्वरः।।
    एतद्वः कथितं सर्व स्कंदाग्रजसमुद्भवम्।
    यः पठेच्छुणुयाद्वापि श्रावयेद्वा सुखी भवेत्।। वही, 2/70/36-37.
42. वाराह पु., 1/23/21-24.
43. वही, 1/23/25-27 (पूर्वाधं).
44. वही, 1/23/27(उत्तराधं)-29 (पूर्वाधं).
45. भवा०च देवेषु तथा मखेषु कार्येषु चान्येषु महानुभावानाम्
    अग्रे तु पूजां लभतेऽन्यथा च विनाशयिष्यस्यथ कार्यसिद्धिम्।। वही, 1/23/29 (उत्तराधं) -30(पूर्वाधं).
46. वही, 1/23/30 (उत्तराधं)-34.